Vol 9/July 2017 UGC 45080 ISSN 2321 5054

History Times

UGC Approved & Peer Reviewed Research Journal of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon
Prof. B. K. Shrivastava

Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan
SAGAR - 470 001 (M.P.) India

छत्तीसगढ़ी भाषा : एक विवेचन

डॉ. सीमा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष - इतिहास विभाग
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ. ग.)

भारत के अन्य क्षेत्रों की भाँति छत्तीसगढ़ का भी अपना साहित्यिक इतिहास और परंपरायें हैं। छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परंपरा अन्य क्षेत्रीय साहित्य की तरह ही, हिन्दी परंपरा के साथ, गतिशील रही है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में भी वीरगाथा काल, भक्ति काल और रीति काल के बाद आधुनिक काल आता हैं।

वस्तुतः छत्तीसगढ़ी (गोंड़ी) भाषा है जो मुख्यतया, रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, राजनांदगाँव, बस्तर, रायगढ़, जिलों में बोली जाती है। गोंड़ी (छत्तीसगढ़ी) भाषा एक स्वतंत्र भाषा है। विद्वानों के मतानुसार इनका जन्म पश्चिमी अर्धमागधी हुआ है। छत्तीसगढ़ी पर पूर्व अर्धमागधी कौशली और महाराष्ट्री प्राकृत की बेटी बाडारी (विदर्भ) भाषा का प्रभाव है। जैसे खटमल को विदर्भ और छत्तीसगढ़ी में 'ढेकना' कहते हैं।[1] इसके अलावा छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में जहाँ गोंड़ों की अधिकता है वहाँ आज भी छत्तीसगढ़ी से कुछ भिन्न दक्षिण भारत की तेलगू, तमिल मिश्रित गोंड़ी भाषा बोली जाती है।

हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में कुछ रूप संबंधी विभिन्नताएँ हैं जैसे हिन्दी में उसने ''कहा'' को छत्तीसगढ़ी में ''कहीस'' और उसने ''मारा'' को ''मारिस'' कहते हैं।[2] सर्वनाम में वाचक रूप को वाचक रूप बनाने के लिये छत्तीसगढ़ी में ''सब'' के लिए ''सब्बोझन'', ''लड़के'' के लिए ''लइकामन'' आदि कहा जाता है।[3] इस तरह हिन्दी और छत्तीसगढ़ी के व्याकरण में कहीं-कहीं समानता और असमानता है। जिससे छत्तीसगढ़ी को अपने पृथक अस्तित्व का गौरव भी प्राप्त होता है। छत्तीसगढ़ी भाषा (बोली) की लिपि देवनागरी है।[4]

छत्तीसगढ़ विभिन्न भाषाओं का संगम स्थान भी रहा है। छत्तीसगढ़ भाषा के बारे में दो तरह की भ्रांतियाँ हैं, पहली तो यह कि लोग इसे बोली (उपभाषा) समझते हैं और दूसरा यह कि इसे हिन्दी का विकृत रूप माना जाता है।[5] इस छत्तीसगढ़ी भाषा को व्याकरण सम्मत लिपिबद्ध करना कठिन था। क्योंकि छत्तीसगढ़ी भाषा इस क्षेत्र के चारो दिशाओं के निकटवर्ती क्षेत्रों से आये लोगों की भाषा से प्रभावित है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ी भाषा के व्याकरण को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ी के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के कई स्थानों की स्थानीय बोली की भी भाषा शामिल है जैसे हलवी, लरिया, खलहाटी, सरगुजिया, कोरवा बैगानी, बिंझवारी, कलंगा तथा भूलिया आदि, इसकी अंतवर्तिनी बोलियाँ हैं।[6] हलवी-हलवा जाति की बोली है जो बस्तर की एक प्रधान बोली है। इसी तरह भतरी-भतरा जाति की बोली है। भतरी बोली बस्तर राज्य के उत्तर पूर्व सीमा में बोली जाती है। इसी प्रकार खलहाटी और लरिया बोली, कौड़िया, सालटेकरी भी मलाल तथा रायगढ़ में बोली जाती है। सरगुजिया भाषा जो छत्तीसगढ़ी का ... है ... में बोली जाती है।[7] बैगानी-बइगा जाति की बोली है, जो कवर्धा, उत्तरी छत्तीसगढ़, रायपुर,

ISSN 2321 5054

ासपुर व संबलपुर में बोली जाती है। बिंझवारी-बिंझवार जाति की बोली है जो रायपुर, रायगढ़, सरगुजा और पटना में बोली जाती है।

रायपुर और बिलासपुर की छत्तीसगढ़ी परिनिष्ठत मानी जाती है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र के छत्तीसगढ़ी भाषा में स्थानगत भेद स्पष्ट दिखाई देता है। जो भाषा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय है। भाषा विज्ञान के विद्वानों ने छत्तीसगढ़ी भाषा की उत्पत्ति पर गहन अध्ययन किया है। छत्तीसगढ़ी भाषा के विभिन्न स्वरूपों को देखकर विदेशी विद्वान ग्रियर्सन ने छत्तीसगढ़ी की आठ बोलियों का उल्लेख किया है जो ये हैं :- (1) लड़िया (2) खलहाटी (3) सरगुझिया (4) सदरी कोरवा (5) बैगानी (6) बिंझवारी (7) कलंगा और (8) बस्तरिहा हल्वी।

इन आठ छत्तीसगढ़ी बोलियों के विवरण को भौगोलिक परिवेश में अलग-अलग बताया है, जो इस प्रकार है :-

(1) खड़िया को उन्होंने छत्तीसगढ़ी का पर्याय बताया है। लड़िया वस्तुतः छत्तीसगढ़ी का एक वह रूप है जो रायगढ़ जिले का तथा रायपुर की महासमुंद बिंद्रानवागढ़ तहसीलों में प्रचलित है। इसे छत्तीसगढ़ का पूर्वी रूप भी कहते हैं। इसके अलावा इसे पूर्वी छत्तीसगढ़ी लटिया क्षेत्र भी कहते हैं। इसमें उड़िया भाषा के लक्षण हैं।

(2) खलहाटी बोली कवर्धा, खैरागढ़, राजनांदगाँव और बालोद के पश्चिम में बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी को कहते हैं। इसे छत्तीसगढ़ी का पश्चिमी रूप कहते हैं। इसे खन्ता बोली भी कहते हैं। इसमें बालाघाट क्षेत्र भी शामिल है।

(3) सरगुझिया सरगुजा में बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी बोली है। इसे छत्तीसगढ़ी का उत्तरी रूप कहा जाता है। जिसका निकट संबंध भोजपुरी से है।

(4) कलंगा और मुलिया बोली, रायगढ़ के पूर्व में बोली जाती है। अब इन बोलियों का क्षेत्र छत्तीसगढ़ के बाहर है। उड़िया भाषा इसमें अपनी बोलियाँ होने का दावा करते हैं।

(5) सदरी कोरवा बोली (अर्थात् नागपुर की नागपुलिया बोली) जाती है।

(6) बैगाइनी बोली, पूरे छत्तीसगढ़ में बोली जाती है। यह बैगाइनी बैगा जाति की बोली है इसमें गोंड़ और बुंदेली भाषा का प्रभाव ज्यादा है।

(7) बिंझवारी बोली रायपुर, रायगढ़ और सरगुजा में बोली जाती है। बैगाइनी और बिंझवारी जातिगत बोली हैं जो यहाँ कई जगह बोली जाती हैं।

(8) बस्तरिया हल्वी-बस्तर में तीन बोलियाँ मिलती हैं।[8] कांकेरी, हल्बी और भतरी। कांकेरी कांकेर तथा भानुप्रतापपुर के आसपास बोली जाती है। इसमें छत्तीसगढ़ी के सभी लक्षण विद्यमान है। हल्बी भी छत्तीसगढ़ी की उपबोली है। यह भतरा आदिवासियों की बोली है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ी भाषा आठ प्रकार की लोक बोली से युक्त होकर समस्त छत्तीसगढ़ी में समाई हुई है।

क्षेत्रीय उपभाषाओं के मिश्रण से बनी छत्तीसगढ़ी भाषा, एक संपन्न भाषा है और इसका व्याकरण भी स्वस्थ है। स्व. हीरालाल काव्योपाध्याय ने इसका व्याकरण बना कर इस भाषा को सशक्त कर दिया है।[9] छत्तीसगढ़ी भाषा की शब्द बद्धता की प्राचीनता को देखते हुए कुछ विद्वानों का मत है कि छत्तीसगढ़ी भाषा केवल दो-तीन सौ वर्ष ही पुरानी है क्योंकि लिखित रूप में इस भाषा का साहित्य बहुत कम मिलता है, किन्तु यह मत भ्रामक है वास्तविकता यह है कि छत्तीसगढ़ी की लोकभाषा इतनी प्राचीन है कि लोकोक्तियाँ, कहावतें, पहेलियाँ, मुहावरे, लोककथाएँ एक

पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जुड़ी हुई हैं। लोक भाषा की ये सामग्रियाँ आज भी बिना शब्द बद्ध हुए जीवंत है। ऐसी स्थिति में इसे दो-तीन सौ वर्ष पुरानी कहना उचित नहीं है। लोक भाषा (अर्थात अलिखित भाषा) का आधार लोकवाणी होती है जो बहुत मजबूत होती है। लोक भाषा के आधार पर ही महर्षि वाल्मिकी जी ने त्रेतायुग में रामायण रचना की जो 'वाल्मिकी रामायण' के नाम से प्रसिद्ध है।[10]

किसी क्षेत्र की प्राचीनता को दर्शाने के लिए लोक भाषा भी एक प्रमुख मापदण्ड होता है। डॉ. स्व. नरेन्द्र देव वर्मा ने पूर्वी हिन्दी के अवधी भाषा से छत्तीसगढ़ी भाषा को लगभग 1080 वर्ष पहले (अर्थात् 9वीं-10वीं शताब्दी) का बताया है।

विश्व की अन्य भाषाओं की तरह छत्तीसगढ़ी भी एक लोक भाषा है जो अपनी विशिष्टता से इस अंचल में लोकप्रिय है। इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती यह अपनी विशेषताओं से परिपूर्ण है भले ही लिपिबद्धता की दृष्टि से संस्कृत व हिन्दी आदि भाषा की तरह प्राचीनतम प्रमाणित नहीं हो सकी, किन्तु लोक भाषा की विशेषताओं से वंचित नहीं है। यह अपनी विविधताओं से संपन्न है और लोकप्रिय भी। लोकप्रिय वही भाषा हो सकती है जो समादूत हो। यह लोक भाषा, छत्तीसगढ़ के अंचल में घर-घर, गाँव-गाँव और जन-जन के हृदय में पूर्ण समादूत है।

सन्दर्भ

1. गुप्ता मदन लाल : छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन, भाग-2 पृष्ठ 358-360, भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, रायपुर, 1998.
2. शुक्ला डॉ. शांता : छत्तीसगढ़ का सामाजिक आर्थिक इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ-911.
3. शर्मा डॉ. पालेश्वर प्रसाद : छत्तीसगढ़ी के तीज त्यौहार और रीति-रिवाज, अरपा पाकेट बुक्स, बिलासपुर, 2000, पृष्ठ-3, 5, 8.
4. शर्मा डॉ. अरविन्द : छत्तीसगढ़ी का राजनीतिक इतिहास, अरपा पाकेट बुक्स, बिलासपुर, 2005-06, पृष्ठ-19.
5. वर्मा भगवान सिंह : छत्तीसगढ़ का इतिहास म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2003, पृष्ठ-9, 10, 11.
6. दवे कृष्ण कुमार : भारतीय चेतना और विकास, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर.
7. गुप्ता मदन लाल : छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग-2, प्रकाशन भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, 1998, पृष्ठ - 361, 363.
8. गुप्ता मदन लाल : छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन भाग-2, प्रकाशन भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, 1998, पृष्ठ - 364.
9. मदन जी. आर. : भारतीय सामाजिक समस्याएँ, दिल्ली 1982, पृष्ठ-236.
10. जैन उत्तम चंद, पत्रिका 'चेतना', 1971-72, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, पृष्ठ-57.